International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 6; November 2017; Page No. 373-374

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में जीवन मूल्य

डॉ० राजेन्द्र सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जनता महाविद्यालय, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक परम्परा में पुरुषार्थ चतुष्टय मानव समाज के सर्वोच्च मूल्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ही माने जाते हैं। साहित्य में जीवन मूल्यों का प्रतिबिम्ब झलकता है। मानव समाज जीवन के उच्च मूल्यों से प्रेरणा प्राप्त करता है। कालान्तर में मानव जीवन की घटनाओं के उत्थान-पतन के साथ-साथ मानव मूल्यों में उद्वेलन होता है। यह सर्वमान्य और सार्वभौम सिद्धांत है कि मानव समाज मानव-मूल्यों और उच्चादर्शों के आधार पर ही समाज का अस्तित्व स्थिर है। ये तो मानव समाज के प्राणाधार है।

सामान्यतः मूल्य का अर्थ होता है जीवन के प्रति दृष्टिकोण, मानवीय विचारधारा, व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व पर मूल्य निर्धारण होता है। उसके कार्य व्यवहार व आचरण पद्धति आदि। मूल्य का सामान्य अर्थ किसी वस्तु का भाव या तोल मोल। मूल्यों का सम्बन्ध मानव से स्थापित किया गया है। समाज से मानव को अलग करके नहीं देखा जा सकता। मूल्यों की सत्ता मानव के वैचारिक जगत् पर निर्भर होता है।

डब्ल्यू एम. अर्बन के अनुसार, "वही वस्तु अंतिम रूप में स्वलक्ष्य दृष्टि से मूल्यवान है जो कि व्यक्तियों को आत्मविश्वास एवं आत्मानुभूति की ओर ले जाती है।"[1]

कृष्णा सोबती ने अपने विवेच्च उपन्यासों में विभिन्न संदर्भों में विभिन्न मूल्यों को उद्घाटित किया गया है। उनके उपन्यासों में पारिवारिक वातावरण की प्रधानता है। परिवार में व्यक्ति जीवन का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार कृष्णा सोबती के उपन्यासों में इस पवित्र मूल्य में विघटन दिखाई देता है।

सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन मूल्य

समाज में रहकर मानव अपनी सामूहिकता और एकता का परिचय देता है। समाज में रहकर ही मानव अपना सर्वांगीण विकास करता है। मानव की परस्पर सहयोग वृत्ति, उन्नति और प्रगति में योगदान देती है। यह सहयोग उसके सामाजिक मूल्यों का क्षेत्र निर्धारित करता है। कृष्णा सोबती के उपन्यास साहित्य में सामाजिक व्यवस्था की प्रधानता दिखाई पड़ती है। परिवार एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ व्यक्ति परस्पर संबंधों का निर्वाह करके अपने चारों ओर प्रेम और सद्भाव का परिवेश निर्माण करता है। मानव परस्पर सहयोग एकता, दया, सहानुभूति आदि मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचायक है। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में शाह परिवार संयुक्त परिवार के रूप में चल रहा है। जिसने मान-मर्यादा, प्रेम आपसी सहयोग, भाई-प्रेमी सभी कुछ रूप में विद्यमान है-'हे लड़की की वृद्धा मन में सदैव परिवार की सुंदर कल्पना करती है। वृद्धा कहती है गृहस्थी की सारी शोभा नामों की है। यह उसकी पत्नी है, बहू है, दादी है, फिर नहीं खाना पहनना और रहना लड़की.....महारानी है।[2] इस प्रकार कृष्णा सोबती जी ने सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों को अपने उपन्यासों में दर्शाया।

प्रेम परक मूल्य

प्रेम मानव की भावना उसकी रागात्मिक वृत्ति की सूचक है। स्त्री-पुरुष प्रेम में दाम्पत्य प्रणय और शारीरिक आकर्षण के सम्बन्धों में कृष्णा सोबती का दृष्टिकोण सर्वथा नया है। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों में पंजाबी परिवेश की परम्परागत प्रेम भावना को उजागर किया है। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास के ज्यादातर प्राप्त प्रेम-गाथा में लीन दिखाई देते हैं। इन सभी में निष्कपट प्रेम राबिया का है। उसका प्रेम वाणी में मौन और अनुभूति में अति तीव्र है। राबिया का गान सुनकर शाह की सुध-बुध खो गये- "खबरे कहाँ से बंध आँखों के आगे हक की झलक उठाई कि राबिया मदरसे से परती है और घर के चैक में जा बैठी है। सिर दुपट्टे से ढका है और थाली की ओर बढ़ते हाथ की कलाई में सोने का कंगन झिलमिलाता".... राबिया रो-रोकर कहती है यह न कहना शाह साहिब यह कभी भी मत कहना मैंने आपको..... शाहणी के आँखों के आगे आंधियाँ उड़ने लगी। राबिया का प्रेम सही तौर पर, जाति-धर्म आयु और सम्बन्धों में लीन हो जाता।"[3]

यौन सम्बन्ध का जीवन मूल्य

विवाह पूर्व सैक्स मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण व्यवहार है। यह मानव व्यक्तित्व विकास का प्रभावकारी अंश है। संसार में मानव जीवन यापन करने के लिए अनेक प्रकार से देह तृप्ति की आवश्यकता होती है- "वे नींद में इस तरह सोए कि नींद से जागना नहीं चाहते। शाह जी इस कार्य को उचित न मानते हुए उन दोनों का विवाह करवा देना चाहता है। अरे यारों के यार, में तमाशा और तमन्ना दोनों भी कार्यालय में सैक्स करती नजर आती है। सैक्स की सहज प्रवृत्ति जीवन के गति चक्र में सदा ही शक्तिशाली प्रेरक तथा आगे बढ़ने वाली शक्ति रही है।"[4]

जाति भेद मूल्य

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में जाति-भेद एक विशेष मूल्य के रूप में चित्रण हुआ है। विवाह के सम्बन्ध में जाति का विशेष महत्व दिखाया गया है। कुल गोत्र और धर्म को देख करके विवाह का बन्धन स्वीकारा जाता है। सोबती के जिन्दगीनामा उपन्यास में शाह जी कहता है- "कुल गोत्र या खानदानी देखने जांचने की टेब-टेक तो कोई बुरी बात नहीं है। हमारे पुरखों ने सोच-समझ के ही यह बन्धन बनाया था। जो मेल नहीं मिलाते उन्हें तर्क कर दिया। धर्म शास्त्र कहते हैं कि किस्मत और तासीर का फर्क सात पीढ़ियों में.....।"[5]

"विधवा लखमी के म्लेच्छा से प्रेम या यौन सम्बन्ध जाति बन्धन की रूढ़ियों में जकड़े है। चाची महरी और शाहनी जखमी के इस कृत्य पर उसे अपमानित करती है। शाहनी पूछती है-है री ब्राह्ममानियों तू उस पौंची तो कैसे पहुँची। धर्म के चोले का भी लिहाज हया न रखा।"[6]

नैतिकता का त्याग

नैतिकता व्यक्ति के जीवन में अति प्रमुख मूल्य माना जाता है। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रमुखता उस नैतिक मूल्य के सहारे होती है। आज किसी भी व्यक्ति की अच्छाई-बुराई उसकी नैतिकता के आधार पर गिनी जाती है। 'मित्रो मरजानी' की मित्र उस पारम्परिक नैतिक मूल्यों को तोड़ देना चाहती है उसके खिलाफ विद्रोह करती है। यौन तृष्णा के प्रति मित्रो तृप्त न होकर यह खुलकर सब परिवार वालों के सामने नैतिकता को त्यागती हुई कहती है- "जिठानी! तुम्हारा देवर मेरा रोग समझता

नहीं, मेरे देह में इतनी आग है कि मैं मछली से तड़पती हूँ।"[7]

अन्याय का विरोध

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में यह अन्याय का विरोध जैसे मूल्य प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में सामंती और शोषण का विरोध प्रकट हुआ है। कृष्णा सोबती के 'जिन्दगीनामा' उपन्यास में अन्याय के प्रति विद्रोह एवं संधर्ष करने की नई चेतना विद्यमान है। जो नारी पीढ़ी की देन है। मेहरअली कहता है- "गाह पड़े जोगे चले जिगल फिर दोनों के ढेर लगे खेत तो शाहों को ही न अपने हिस्से तो यही मेहनताना बाड़ी की कुछ भटियाँ।"[8]

सारांश रूप में कहा जाता है कि कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नवीन जीवन मूल्यों को परखने पर यह पता चलता है कि ज्यादातर मूल्यों का ह्रास या विघटन होता हुआ नज़र आता है। उनके सभी स्त्री पात्र मूल्यों को तोड़ते हुए नज़र आते हैं।

आज समाज में हर कहीं पर भौतिक साधनों की माँगों में होड़ लग गई है। इसके कारण भी आपसी सम्बन्ध टूटने लगे हैं। एक-दूसरे व्यक्ति सम्बन्ध कायम करना नहीं चाहता। मूल्य विघटन में भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा है। आज की नारी पाश्चात्य भोगवादी प्रवृत्ति के कारण नैतिकता के बन्धनों का त्याग करने लगी है। रिश्ते, नाते, धार्मिक एवं सामाजिक समस्याओं में मूल्य घटता जा रहा है।

संदर्भ

1. डॉ. मोहिनी टाया, आत्मविश्वास एवं आत्मानुभूति, पृष्ठ संख्या 42
2. कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी पृष्ठ 12
3. वही, पृष्ठ 368
4. कृष्णा सोबती, जिन्दगीनामा, पृष्ठ 115
5. कृष्णा सोबती, हे लड़की, पृष्ठ 107
6. कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, पृष्ठ 52
7. कृष्णा सोबती, जिन्दगीनामा, पृष्ठ 82
8. वही, पृष्ठ 83